हंसता हुआ धर्म

एक अदालत में मुकदमा था। मुल्ला नसरुद्दीन गवाह की तरह मौजूद था। मजिस्ट्रेट ने उससे पूछा कि नसरुद्दीन, जब इस स्त्री की अपने पति के साथ लड़ाई हुई, तब तुम क्या वहां मौजूद थे? मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा, जी हां! जज ने पूछा कि तुम उसके गवाह की हैसियत से क्या कहना चाहते हो? बोलो! मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा, यही हुजूर कि मैं कभी शादी नहीं करूंगा।

मुल्ला नसरुद्दीन एक दिन बहुत नाराज हो गया। किसी बात पर पत्नी से झंझट हो गई थी। गुस्से में एकदम बोला कि इस घर को आग लगा दूंगा। उसका छोटा बेटा जो कोने में बैठा था, वह हंसने लगा। मुल्ला को और क्रोध आया। उसने कहा : तू क्यों हंस रहा है? उल्लू के पट्ठे, तू क्यों हंस रहा है?

तो उसने कहा : मैं इसलिए हंस रहा हूं कि आपसे चूल्हा तो जलता नहीं, घर में आग लगाने चले हैं।

मुल्ला नसरुद्दीन ने अपने विवाह की पांचवी वर्षगांठ पर पार्टी दी थी। मेजें सज चुकी थीं, थालियां लगायी जा चुकी थीं। तभी मुल्ला की पत्नी ने कहा : मुल्ला, अंदर जाइए, आपकी संदूक में जो चांदी के चम्मच पड़े हैं उन्हें ले आइए।

मुल्ला ने कहा : मैं उन्हें नहीं लाऊंगा—चाहे कुछ भी हो जाए मैं उन्हें नहीं लाऊंगा। दूसरे चम्मचों से काम चलाओ।

पत्नी बोली : क्या आप अपने मित्रों का भरोसा नहीं करते? क्या उनको इतना नीच समझते हैं कि वे चांदी के चम्मच चुरा लेंगे?

मुल्ला ने कहा : चुराकर तो नहीं ले जाएंगे, मगर पहचान जरूर जाएंगे।

मुल्ला नसरुद्दीन को उसकी पत्नी ने बाजार भेजा था, कुछ सामान खरीद लाने को। कहीं भूल न जाए, क्योंकि रास्ते में जो भी मिल गया उसी से गपशप...घंटों लग जाने वाले हैं। तो उसने कहा कि तुम ऐसा करो कुर्ते में गांठ बांध लो, याद रही आएगी कि सामान लाना है। तो मुल्ला कुर्ते में गांठ बांधकर बाजार गया। सुबह का निकला सांझ घर लौटा? पत्नी ने कहा—सामान लाए? उसने कहा कि नहीं, मैं यह पूछने आया हूं कि यह गांठ किसलिए बांधी थी?

मुल्ला नसरुद्दीन ने एक दिन बाथरूम से जोर से आवाज दी अपनी पत्नी को कि दौड़, जल्दी आ, जिसका डर था, वह बात हो गयी। पत्नी आयी तो मुल्ला बिल्कुल झुका खड़ा है, कमर झुकी हुई है। किसी तरह सम्हाल कर मुल्ला को ले जाकर बिस्तर पर लिटाया। पूछा कि हुआ क्या?

मुल्ला ने कहा कि डॉक्टर ने कहा था कभी-न-कभी यह होने वाला है, लकवा लग जाएगा, लकवा लग गया।

डॉक्टर को फोन किया। डॉक्टर भागा हुआ आया। जांच पड़ताल की। सब ठीक मालूम पड़े। नाड़ी देखी! सब ठीक है। ब्लड-प्रेशर ठीक है। फिर गौर से देखा, फिर हंसने लगा। उसने कहा कि बड़े मियां, कोई और मामला नहीं हैं, तुमने कोट की बटन पेंट की बटन से लगा ली है इसलिए तुम उठ नहीं पा रहे।

एक मारवाड़ी मर रहा था। मरना तो सभी को पड़ता है। मारवाड़ी तक को मरना पड़ता है और आदमियों की तो बिसात क्या! उसके चार-छः लड़के बैठकर विचार कर रहे थे। छोटा लड़का बोला : एक रॉल्सरॉयस गाड़ी लानी चाहिए। पिता के अंतिम समय उनकी लाश को रॉल्सरॉयस गाड़ी में रखकर ले चलेंगे मरघट।

दूसरे भाई ने कहा : फिजूल खर्चा, अरे, मुर्दे को क्या रॉल्सरॉयस में ले गए कि एंबेसेडर गाड़ी में ले गए, क्या फर्क पड़ता है? एंबेसेडर से काम चल जाएगा।

तीसरे भाई ने कहा कि मुर्दे को क्या फर्क पड़ता है एंबेसेडर...नाहक का खर्चा बांधना, पेट्रोल महंगा, पड़ोसी गाड़ी दें कि न दें, मेरा तो ख्याल है कि वह पुरानी तरकीब ही ठीक कि अर्थी बना लेंगे और कंधे पर रख कर ले चलेंगे।

चौथे भाई ने कहा : मरघट है दूर, गरमी के दिन और देश मारवाड़। खुद तो हम जल-भुन जाएंगे ही, साथ कौन जाएगा अर्थी के? और इनकी जिंदगी-भर की कहानियां और इनके जिंदगी भर के गोरखधंधे...वैसे ही कोई साथ जाने को तैयार नहीं, तो इतनी दोपहरी में कौन साथ जाएगा? और हम भी थक मर जाएंगे ले जाकर। बैलगाड़ी में रखकर ले चलना ठीक रहेगा।

पांचवें ने कहा : फिजूल की बकवास में पड़े हो, अपने घर जो गधा है, वही ठीक है उसी पर बांध देंगे और ले चलेंगे।

तभी बाप जो मर रहा था, यह सब सुन रहा था, एकदम उठ आया और कहने लगा : मेरी चप्पल कहा है?

उन्होंने कहा : चप्पल का क्या करोगे? उसने कहा कि मैं पैदल ही चलता हूं। अरे, अभी इतनी जान मुझमें शेष है, नाहक का खर्चा करना, गधे को सताना, आजकल घास भी महंगा और हर चीज की झंझट...।
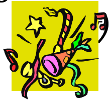
— *(ओशो की पुस्तकों से*